Subject :- Sociology Date :- 01/05/2020
Class :- D-I(H) Paper :- 2nd
Topic :- मर्टन के विचलित व्यवहार सम्बन्धी सिद्धान्त
By :- Dr. S.N. Choudhary, Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga
Online Study Material No:- 62

मर्टन के विचलित व्यवहार सम्बन्धी सिद्धान्त

अमेरिकन समाजशास्त्री R.K. Merton ने अपनी पुस्तक 'Social theory & Social Structure' में विचलित व्यवहार के संदर्भ में अपना विचार प्रस्तुत किया है। यहाँ यह लिखना अप्रासंगिक नहीं प्रतीत होता है कि मर्टन ने पृथक् रूप से विचलित व्यवहार नाम से कोई सिद्धांत प्रस्तुत नहीं किया है। उन्होंने सामाजिक संरचना और विसंगति (Social structure & Anomie) की विवेचना के संदर्भ में विचलित व्यवहार की व्याख्या प्रस्तुत की है जिसे Merton का विचलित व्यवहार का सिद्धान्त मान लिया जाता है। उनके अनुसार विसंगति की स्थिति विचलित व्यवहार को उत्पन्न करती है। मर्टन ने यह विचार दिया है कि अपने व्यवहार के दौरान व्यक्ति सांस्कृतिक लक्ष्यों (Cultural goals) तथा संस्थागत साधनों (Institutional means) को यातो स्वीकार कर लेता है या अस्वीकार कर देता है। सांस्कृतिक लक्ष्यों और सांस्कृतिक साधनों को स्वीकार करने के कारण समाज में अनुरूपता (Conformity) उत्पन्न होती है और अस्वीकार करने के कारण विचलित व्यवहार की समस्या उत्पन्न होती है। Merton के अनुसार कभी-कभी ऐसा भी होता है कि समाज में लोगों को उच्च सांस्कृतिक लक्ष्यों की जानकारी रहती है किंतु इन लक्ष्यों की प्राप्ति किन मान्य साधनों द्वारा की जाय, इसकी स्पष्ट व्याख्या समाज द्वारा प्रस्तुत नहीं की जाती है। ऐसी स्थिति में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्ति के लिए भटक जाना स्वाभाविक है। विचलित व्यवहार ऐसी ही स्थिति के परिणाम होते हैं। उदाहरणार्थ - व्यक्ति के लिए यह सांस्कृतिक लक्ष्य तो निर्धारित कर दिया जाता है कि पढ़-लिखकर स्वावलम्बी बने और अपने परिवार के सदस्यों का भरण-पोषण करे किंतु जब कोई व्यक्ति ईमानदारी के रास्ते पर चलकर इस लक्ष्य को प्राप्त करने में असमर्थ रहता है तो वह अवैध तरीकों से इस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। फलस्वरूप उनका व्यवहार विचलित हो जाता है।
Merton के अनुसार जब सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उपलब्ध साधन कभी-कभी प्रभावहीन तथा पुराने (out of date) हो जाते हैं। इस अवस्था में ये साधन सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति

नहीं कर पाते हैं। अतः [redacted] प्रतिभाशाली लोग अपने लक्ष्यों को प्राप्त करते थे और कुछ साधनों की खोज करते हैं। चूंकि इन साधनों को उस समय तक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं हो पाती, इस कारण उन साधनों को अपनाने वाले व्यक्तियों के व्यवहार को समाज द्वारा विचलित व्यवहार कहा जाता है।

Merton ने विचलित व्यवहार की विवेचना में इस बात का वर्णन किया है कि जिस प्रकार सामाजिक संरचना और विसंगति में घनिष्ठ सम्बन्ध है उसी प्रकार सामाजिक संरचना और विचलित व्यवहार भी घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। मर्टन के अनुसार तीव्र गति से परिवर्तन की स्थिति में विचलित व्यवहारों के उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है। कभी-कभी राजनैतिक उथल-पुथल के कारण सामाजिक संरचना में क्रांतिकारी परिवर्तन होता है। ऐसे समय में विचलित व्यवहारों में वृद्धि होती है। भारत में इसी प्रकार का परिवर्तन आजादी प्राप्त होने के समय देश के विभाजन के अवसर पर हुआ था। देश के विभाजन के समय अनेक शरणार्थी यहाँ आए उन शरणार्थियों को यहाँ पर जमाने के लिए अनेक गलत और सामाजिक प्रत्याशाओं के विपरीत कार्य करने पड़े। साथ ही यहाँ के भी अनेक लोगों ने सामान्य शिष्टाचार और रीति-नीति से हटकर उनका खूब शोषण किया। इस प्रकार दोनों ही ओर से विचलित व्यवहारों का खूब प्रदर्शन हुआ।

मर्टन ने सामाजिक विचलन के सिद्धान्त में कहा है कि सामाजिक संरचना में तीव्र गति से परिवर्तन के दौरान लोगों की प्रस्थिति और भूमिका में भी परिवर्तन अवश्यम्भावी हो जाता है। परिवर्तित प्रस्थिति में अपनी नयी भूमिका को निभाना एक कठिन कार्य है। जिनके लिए यह कठिन कार्य सिद्ध होता है उनका व्यवहार विचलित हो जाता है। मर्टन के अनुसार सामाजिक संरचना में तीव्र परिवर्तन के कारण अनेक स्थापित सामाजिक सम्बन्ध टूट जाते हैं, सामाजिक संस्थाओं तथा रूढ़ियों में संघर्ष उत्पन्न होता है और समाज के सदस्यों की प्रस्थितियाँ एवं भूमिकाएँ भी उलट सकती हैं। ये सभी अवस्थाएँ सामाजिक असंतुलन को उत्पन्न करती हैं और यह सामाजिक असंतुलन विचलित व्यवहारों को उत्पन्न करता है।

Merton ने विचलित व्यवहार के चार स्वरूपों का भी उल्लेख

किया है जो निम्नलिखित हैं :—

(1) नवाचार (Innovation) → मर्टन के अनुसार नवाचार में संस्थागत व्यवहार प्रणालियों को तो अस्वीकार किया जाता है या त्याग दिया जाता है, किंतु सांस्कृतियों के लक्ष्यों को सुरक्षित रखा जाता है। इसका मतलब कि नवाचार के अन्तर्गत पुरानी व्यवहार प्रणालियों या तरिकों को त्यागकर नए या संशोधित तरिकों को अपनाया जाता है, यद्यपि सांस्कृतिक लक्ष्य वही रहता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि नवाचार की स्थिति में व्यक्ति सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समाज द्वारा स्वीकृत तरीकों से दूर-हटकर या उन्हे त्यागकर कुछ नए या संशोधित तरीकों को अपनाता है। फलस्वरूप उसका व्यवहार विचलित व्यवहार बन जाता है। मर्टन ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि जब कुछ लोग संस्थागत तरीकों से दूर हटकर या त्याग कर भी सांस्कृतिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल हो जाते हैं तो यह सफल व्यवहार अन्य अनेक लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करता है और वे भी उसी रूप में व्यवहार करना आरंभ कर देते हैं। ऐसी परिस्थिति में समाज में विचलित व्यवहार खूब फैलता है।

Merton के अनुसार समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से समूह के प्रभावी आदर्श-नियमों से प्रत्येक प्रकार का विचलन उस समूह के आधारभूत मूल्यों एवं अनुकूलन के लिए आवश्यक रूप में हानिकारक परिणामों को उत्पन्न करने वाला या अकार्यात्मक (Dysfunctional) नहीं होता। समाज के प्रचलित मूल्यों का निष्ठापूर्वक पालन केवल उसी समाज या समूह में हो सकता है जो पूर्णरूपेण स्थिर हो और जहाँ की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों में कभी कोई परिवर्तन होता ही न हो। इस प्रकार के नवाचार के फलस्वरूप नए संस्थागत व्यवहार-प्रतिमानों का निर्माण हो सकता है जो कि पुराने तरीकों से अधिक उपयोगी और उपयुक्त सिद्ध होते हैं।

मर्टन के अनुसार यह मान्यता गलत है कि विचलित व्यवहार आवश्यक रूप में सामाजिक अकार्य के समतुल्य या समान है और सामाजिक अकार्य नैतिक नियमों का उल्लंघन ही है। प्रत्येक समाज के इतिहास में उसके कुछ सांस्कृतिक नायकों को वीर इसलिए माना गया है क्यों की उनमें, समूह में उस समय प्रचलित आदर्श नियमों से दूर हटने का साहस और दूर दृष्टि रही थी। सुकरात, गैलिलीयो, चैतन्य, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती आदि महापुरुषों

Scanned with CamScanner

को अपने समय के प्रचलित सामाजिक नियमों से दूर रहने के लिए समाज द्वारा कितने ही हिंसक विरोधों का भी सहना पड़ा था, पर वे ही आज के सांस्कृतिक नायक हैं।

(2) कर्मकान्ड (Retuals) → मर्टन के अनुसार कर्मकान्डी व्यवहार भी विचलित व्यवहार का द्योतक है। मर्टन ने यह विचार किया है कि एक कर्मकाण्डी संस्थागत नियमों पर इतना अधिक बल देने लगता है कि उसका व्यवहार प्रतिमान सामान्य व्यवहार-प्रतिमान से भिन्न हो जाता है और इसी अर्थ में उसके व्यवहार को विचलित व्यवहार कहा जा सकता है। एक भारतीय उदाहरण द्वारा इस स्थिति को स्पष्ट किया जा सकता है। धर्म सूत्रकारों ने लड़कियों के बाल-विवाह के पक्ष में राय दी और धीरे-धीरे स्मृतिकारों ने मासिक धर्म के पहले ही विवाह करने की अनुमति दे दी। कर्मकाण्डियों ने इस अनुमति पर इतना अधिक बल देना प्रारंभ किया कि लोगों में अपनी लड़कियों का विवाह जल्द से जल्द कर देने की आपस में होड़ सी लग गयी और दो-चार साल की अवस्था में भी कन्याओं का विवाह होने लगा। स्पष्ट है कि धर्म सूत्र और ब्राह्मण पुरान में उल्लेखित नियमों के कठोरतम पालन के कारण ऐसे लोगों का व्यवहार विचलित व्यवहार की श्रेणी में चला गया।

(3) अपसारण (Retreatism) → Merton ने अपसरण को भी विचलित व्यवहार का एक स्वरूप माना है। अपसरण वह व्यवहार प्रतिमान है जिसमें कभी सम्मानित माने जाने वाले सांस्कृतिक लक्ष्यों एवं इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की संस्थागत कार्य प्रणालियों दोनों को ही पर्याप्त रूप में त्याग दिया जाता है। समस्यात्मक परिवारों के व्यवहार प्रतिमानों को इसी श्रेणी में रखा जाने लगा है। इन परिवारों के सदस्यों का व्यवहार-प्रतिमान उनके सामाजिक पर्यावरण में पायी जाने वाली आदर्शात्मक प्रत्याशाओं के अनुरूप नहीं होता। इसी कारण उसे विचलित व्यवहार माना जाता है।

(4) विद्रोह (Rebellion) → मर्टन के अनुसार विद्रोह भी विचलित व्यवहार का एक स्वरूप है। उनके अनुसार विद्रोह उस व्यवहार प्रतिमान का द्योतक है जबकि समाज का एक समूह दूसरे समूह द्वारा मान्य सांस्कृतिक मूल्यों, आदर्शों और नियमों को मानने से इन्कार कर देता है एवं स्वयम् अपने लिए नए मूल्यों, नियमों एवं मान्यताओं को विकसित करता है। युवा क्रियावाद या आन्दोलन

Scanned with CamScanner

(Youth activism or movement) जिसकी एक विशिष्ट उप संस्कृति होती है। इस प्रकार के विद्रोही समूह का एक उत्तम उदाहरण है। पुराना जमाना अब नही रहा जबकि युवा वर्ग आँख मूँद कर परम्परागत लक्ष्यों और संस्थागत नियमों का अनुसरण करता था। अब यह वर्ग अपने चारो ओर की परिस्थितियों विशेष कर शिक्षा, नियोजन, आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों एवं समस्याओं के सम्बन्ध मे उत्तरोत्तर सचेत होता जा रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में जब उसकी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति नही होती है तब वह विद्रोही बन जाता है और उसे बाध्य होकर आंदोलनात्मक कदम उठाना पड़ता है भले ही उससे स्वीकृत व्यवहार प्रतिमानों का उल्लंघन होता है। उसकी आंदोलनात्मक क्रियाओं में कुलपति का घेराव करना, विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के कार्यालयों का कार्य बाधित करना या ठप करना, जुलूस निकालना, नारेबाजी करना, तोड़-फोड़ करना, आग लगाना, हड़ताल करना, पठन-पाठन बन्द कराना आदि सम्मिलित हैं। ये सब व्यवहार विचलित व्यवहार के ही द्योतक है।

आलोचना (Criticism)

R.K. Merton के विचलित व्यवहार के सम्बन्ध में विचार कुछ रूपों में दोषपूर्ण प्रतीत होता है जो निम्न है :-

(क) Merton ने विचलित व्यवहार को सामाजिक संरचना में व्यक्ति की स्थिति के सन्दर्भ में समझाने का प्रयत्न किया है। कुछ लोगों का कहना है कि विचलित व्यवहार केवल समाज द्वारा मान्य या स्वीकृत व्यवहार प्रतिमान से विचलन की स्थिति होती है। जैसे - शराबखोरी, वेश्यावृति, व्यवसायिक अपराध, समलैंगिक सम्भोग इत्यादि।

(ख) मर्टन ने विचलित व्यवहार से विसंगति को भिन्न बताया है किंतु इन दोनों में स्पष्ट अन्तर बताने में असफल सिद्ध होते हैं जो इनके इस सिद्धान्त का एक दोष कहा जा सकता है।

S.N. Choudhary
Marwari college
L.N.M.U

Scanned with CamScanner